International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal l -Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals

e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

सिन्धु सभ्यता के आध्यात्मिक तत्वों का सातत्य एवं अतिजीविता

आदर्श प्रताप सिंह

एम0ए0–प्राचीन इतिहास

डा0 राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय फैजाबाद

सार– सिन्धु सभ्यता की खोज के पूर्व यह माना जाता था कि भारतीय संस्कृति आर्य सभ्यता की ऋणी थी परन्तु सिन्धु सभ्यता ने इस भ्रम को तोड़ा सिन्धु सभ्यता में उपलब्ध संस्कृति एवं व्यापार ने आधुनिक समाज को प्रभावित किया चाहे वह धर्म का क्षेत्र हो या व्यापार या कृषि या पशुपालन, हर जगह सिन्धु सभ्यता ने प्रभावित किया।

परिचय–

सैंधव सभ्यता में उपलब्ध आध्यत्मिकता का वर्तमान संस्कृति पर प्रभाव स्पष्ट रुप से दिखाई देता है। सिन्धु सभ्यता का प्राचीन भारतीय धर्म के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान स्वीकार किया जाता है। पशुपति शिव की मान्यता मातृदेवी की उपासना, वृक्ष पूजा जल की पवित्रता, मूर्ति पूजा, तप एवं योग की परम्परा आदि पर प्राचीन सैंधव सभ्यता का प्रभाव पड़ा है।

मातृदेवी की उपासना– हड़प्पा एवं मोहनजोदड़ों आदि से मिट्टी की बनी हुई मातृ मूर्तियां मिली है ये केश सज्जा से परिपूर्ण है इनको पुरातत्वविद पूजा के लिए निर्मित मातृदेवी की मूर्तियां मानते हैं। ऋग्वेद में देखा जाए तो अनेक देवताओं का वर्णन है। जबकि पृथ्वी, वाक तथा आदित ही देवियों के रुप में उल्लिखित हैं। ऐतिहासिक रुप से देखा जाए तो शाक्त धर्म पर सैंधव धर्म का प्रभाव परिलक्षित होता है।

शायद सिन्धु के पूरे क्षेत्र में मातृदेवी की उपासना प्रचलित नहीं थी क्योंकि पाकिस्तान के सिन्धु और पंजाब के पुरास्थलों से मातृदेवी की मिट्टी की मूर्तियां अभी तक नहीं मिली हैं। हरियाणा के हिसार जिले में स्थित वणावली ही एकमात्र स्थल हैं जहां से मातृदेवी की दो मूर्तियां मिली हैं। कालीबंगा तथा लोथल के उत्खनन से कई अग्निकुण्ड एवं अग्निवेदिकाएं उपलब्ध हुयी हैं।

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal l -Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

कालीबंगा के दुर्ग क्षेत्र से 5 अग्निवेदिकाएं मिलती हैं। नगर क्षेत्र में रक्षा–प्राचीर के बाहर पूर्व दिशा में भवन के ध्वंसावशेष में अग्निवेदिकाएं मिली हैं। ऐसी सम्भावना हो सकती है कि राजस्थान एवं गुजरात के क्षेत्रों कें सिन्धु सभ्यता के काल में अग्नि पूजा का प्रचलन रहा है।

पशु एवं वृक्ष पूजा– सिन्धु एवं हड़प्पा सभ्यता में पशु एवं वृक्ष पूजा का प्रचलन था। विभिन्न मृणमूर्तियों का मिलना मुहरों मे वृषभ आकृतियों की प्रमुखता मिलती है जिसका कारण सम्भवतः धार्मिक ही रहा होगा। सिंह, हाथी आदि जानवरों की पूजा का प्रचलन था जो शायद शक्ति का प्रतीक रहा होगा। वर्तमान समय में प्रचलित शिव के वाहन नन्दी तथा गाय का पूजन सम्भवतः सिन्धु सभ्यता की ही देन है। जॉन मार्शल ने तो गणेश पूजा को भी सिन्धु सभ्यता की देन कहा है। पौराणिक रुप से देखा जाय तो वाराह अवतार तथा मत्स्यावतार इत्यादि पशु पूजा के ही विकसित रुप है।

ऐतिहासिक रुप से विकसित होने वाली नाग पूजा परम्परा भी सिन्धु सभ्यता की देन कहा जा सकता है। सिन्धु एवं हड़प्पा सभ्यता में पीपल के वृक्ष की पूजा भी प्रचलित थी ऐतिहासिक रुप से देखा जाय तो आज की भारतीय समाज में पीपल, बरगद, नीम, केला, तुलसी इत्यादि की पूजा की जाती है। इस परम्परा पर भी सैंधव सभ्यता के प्रभाव को स्वीकार किया जा सकता है।

शिव की उपासना– शिव की उपासना सिन्धु सभ्यता का प्रमुख आध्यात्मिक आधार थी। जॉर्न मार्शल नामक विद्वान ने मोहनजोदड़ों की एक मुहर पर अंकित देवता को ऐतिहासिक काल के पशुपति का प्रारम्भिक रुप माना है। शिव के आसपास कुल मिलाकर चार पशुओं के अंकन है जो सम्भवतः उसके पशुपति रुप का द्योतक है आदि शिव को विभिन्न ऐतिहासिक काल के ग्रन्थों में पशुपति, योगी तथा त्रिकालदर्शी कहा गया है। देवता का पद्मासन एवं शाम्भवी मुद्राओं में अंकित किया गया है। हड़प्पा के उपलब्ध नग्न पुरुष पाषाण मूर्ति नृत्य मुद्रा में मिली है जो शिव के रुप में मानी जाती है। कुछ समय पश्चात सिन्धु सभ्यता का प्रभाव रुद्र शिव पर स्वीकार किया जा सकता है। ऋग्वैदिक काल में रुद्र एक गौण देवता थे उत्तरवैदिक काल में शिव का महत्व बढ़ गया था तथा ऐतिहासिक काल में शिव की गणना त्रिदेवों में होने लगी

थी।

मोहनजोदड़ों तथा हड़प्पा से पत्थर तथा मिट्टी के भग्नावशेष मिले हैं जिन्हें योनि तथा लिंग कहा गया है। जो यह सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं कि वर्तमान में शिवलिंग की पूजा कहीं न कहीं उसी से प्रभावित रही होगी।

ऋग्वेद में लिंग की पूजा करने वाले की निन्दा की गयी है। कालान्तर में शिवलिंग की स्थापना लिंग–पीठ में की जाने लगी। डा0 संकालिया जैसे विद्वान इस मत से सहमत नहीं हैं वे कहते हैं कि यदि लिंग का इतना ही महत्व होता तो वे गालियों में न पड़े होते उन्हें कमरें में स्थापित होना चाहिए था।

मूर्ति पूजा– सिन्धु सभ्यता में मूर्ति पूजा प्रचलित थी और उसका आज के धर्म पर व्यापक प्रभाव पड़ा है इसका उदाहरण मातृदेवी की मृण्मूर्तियां, मुहरों पर अंकित देवी–देवताओं की आकृतियां तथा पत्थर की प्रतिमाओं के रुप में मिलते हैं।

जल की पवित्रता– जल की पवित्रता एवं स्नानध्यान की परम्परा भारत में काफी प्राचीन समय से प्रचलित लगती है। मोहनजोदड़ों में एक विशाल स्नानागार मिला है जिसे जल की पवित्रता एवं धार्मिक परम्परा को द्योतक माना गया है। ऐतिहासिक रुप में देखा जाए तो सरित पूजा पर भी सिन्धु सभ्यता का प्रभाव देखा एवं महसूस किया जा सकता है। शायद जल की पवित्रता का सिद्धान्त ही है जिसमें कारण आज भी भारत में नदियों के जल को पवित्र कहा गया है।

तप एवं योग की परम्परा– सिन्धु सभ्यता ने प्राचीन भारत में प्रचलित तप एवं योग की परम्परा को भी प्रभावित किया है। विद्वानों ने कहा है कि ऋग्वैदिक आर्य मूलतः प्रवृत्ति मार्ग के अनुयायी थे। ऋग्वेद में योग की मुद्राओं का कोई साक्ष्य नहीं मिलता है अतः तप एवं योग की परम्परा को आर्येत्तर संस्कृति की देन कहा जा सकता है। इस सम्बन्ध में सिन्धु सभ्यता के पुरावशेष महत्वपूर्ण है। मोहनजोदड़ों से प्राप्त एक मुहर में पुरुष का अंकन पद्मासन मुद्रा में है। पद्मासन योग की एक मुद्रा है। इसके अलावा योग की एक अन्य मुद्रा का अंकन पत्थर की एक मूर्ति में मिलता है जिसकी आधी खुली हुई आंखे नासिका के अग्रभाग पर केन्द्रित है।

वैसे देखा जाए तो पूर्ण रुप से योग दर्शन का विकास आगे चलकर हुआ। योग दर्शन के क्रिया पक्ष की कुछ मुद्राओं पर सैंधव सभ्यता का प्रभाव स्पष्ट रुप से दिखायी देता है।

निष्कर्ष– सैंधव सभ्यता में प्रचलित धर्म का मूल्यांकन जॉन मार्शल ने किया और कहा कि ''सिन्धु घाटी के लोगों के धर्म में अनेक ऐसी बातें हैं जिनसे मिलती जुलती बाते हमें अन्य देशों में भी मिल सकती है। किन्तु आधुनिक युग के प्रचलित हिन्दू धर्म से उनका भेद करना कठिन प्रतीत होता है।'' इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि हिन्दू धर्म और संस्कृति पर सैंधव धर्म का व्यापक एवं गम्भीर प्रभाव पड़ा।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

Agrawal D.P.	-	The Archacology of India London 1982. TheCopper-Bronze age in India, Delhi 1972
Dani, A.H.	-	Indus civilzation : New perspective, Department of Archaeology, Karachi 1981
Dhavalikar, M.K.	-	Cutural imperialism : Indus civilzation in western India Books and Books.
Gaur, R.C.	-	Excavations at Atranjikeres
Ghosh, N.C.	-	Archacological Survey of India, New Delhi 1986
Jansen. M.	-	Mohanjo-daro : City of wells and drains
Jayasawal, Vidula	-	Palaeohistory of India, Delhi
Lal., B.B.	-	Indian Archaeology since independence
Lal, B.B & Gupta S.P.	-	Frontiers of Indus civilization

e-I SSN: 2348-6848
p-I SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

Marshall J. - Mohanjodaro and the Indus valley civilization

Thapar Romila - Ancient Indian Social history

Sharma, Ram Sharma - Ancient India

Jha and Shree mail - History of Ancient India